10

# काव्यशास्त्र प्रवेश-3

ध्यान दें:

अलंकारशास्त्र के पद परिचय के अवसर पर काव्य की आत्मा रस के उत्कर्षक गुण, अलंकार, रीति आदि उल्लेख योग्य होते हैं। इस पाठ में गुण का स्वरूप, गुण के भेद, रीति का स्वरूप, रीति के भेद, अलंकार का स्वरूप और अलंकार के भेद का वर्णन करते हैं। अलंकार भेद के वर्णन के समय कुछ अधिक प्रसिद्ध अलंकारों को सोदाहरण इस पाठ में बताया गया है। उसके बाद काव्य के सौन्दर्य के आधायक छन्द होते है। इसलिए छन्द का सामान्य स्वरूप है। उस प्रसंग में पद्य का स्वरूप और पद्य के भेद वर्णित है। फिर कुछ छन्दों को सोदाहरण इस पाठ में बताया गया है।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे;

- गुण स्वरूप और गुण भेदों को जानने में;
- रीति का स्वरूप और रीति भेदों को जानने में;
- अलंकार स्वरूप और अलंकार भेदों को जानने में;
- कुछ प्रसिद्ध अलंकारों के लक्षणों को जानने में;
- पद्य का स्वरूप और पद्य के भेदों को जानने में;
- कुछ छन्दों के लक्षणों को जानने में;

## 10.1 ) गुण का स्वरूप

गुण, अलंकार, रीति काव्य के उत्कर्ष के हेतु होते हैं। साहित्य दर्पणकार के द्वारा कहा गया है।

**''उत्कर्षहेतवः प्रोक्ता गुणालंकाररीतयः''**॥ इति।

काव्य के गुण शौर्यादि के समान, अलंकार कटककुण्डल के समान, रीति अवयव संस्थान विशेष होते हैं। वे ही शरीर के समान शब्द अर्थात्मक काव्य की आत्मा रस के उत्कर्षक होते हैं। इसलिए ही वे काव्य के भी उत्कर्ष के हेतु हैं।

ध्यान दें:



गुण शौर्यादि के समान होते हैं। अर्थात् आत्मा के उत्कर्ष हेतु शौर्यादि जैसे गुण होते हैं। वैसे ही काव्य में प्रधानभूत रस के धर्म माधुर्यादि रसव्यंजक पद सन्दर्भ के काव्य के उपयोगी गुण होते हैं। इसलिए ही साहित्य दर्पण में गुण का लक्षण कहा है-

**''रसस्याङ्गित्वमाप्तस्य धर्माः शौर्यादयो यथा। गुणाः''।**

गुण तीन होते हैं- माधुर्य, ओज और प्रसाद।

**क. माधुर्य**- माधुर्य का लक्षण है-

**'चित्तद्रवीभावमयो ह्लादौ माधुर्यमुच्यते॥'**

सहृदयों के चित्त का द्रुतिस्वरूप जिसमें अन्तःकरण द्रुत हो जाए ऐसा संभोग आनन्द विशेष माधुर्य गुण होता है। यह गुण वाल्मीकि, कालिदास आदि के काव्यों में दिखाई देता है। सम्भोग में, करुण में, विप्रलम्भ में और शान्त में यह गुण क्रम से अधिकता से दिखाई देता है। रेफ, डकारादि श्रुति कटु वर्णों से रहित, उस वर्ग के अन्तिम वर्ण के साथ, समास रहित और छोटे समास वाली रचना, मधुर रचना इस गुण की अभिव्यक्ति का निमित्त होता है। जैसे-

**अनंङ्गमङ्गलभुवस्तदपाङ्गस्य भङ्गयः।**
**जनयन्ति मुहूर्यूनामन्तः सन्तापसन्ततिम्॥** इति।

यहाँ प्रथम भाग में वर्ग में स्थित अन्तिम वर्ण से डकार सहित उस वर्ग का गकार, और द्वितीय भाग में वर्ग में स्थित अन्तिम वर्ण नकार के साथ उस वर्ग का तकार माधुर्य की अभिव्यक्ति का कारण है।

**ख ओजः**- ओज गुण का लक्षण है-

**'ओजश्चित्तस्य विस्ताररूपं दीप्तत्वमुच्यते।'** इति।

सहृदयों के द्वारा वीरादि रसास्वाद के समय द्रवी भाव के प्रतिकूल चित्त का विस्तार स्वरूप दीप्तत्व ओज होता है। वीर बीभत्स रौद्र रसों में क्रमशः इस गुण की अधिकता होती है। इस गुण की अभिव्यक्ति श्रुतिकटु वर्णों के द्वारा, दीर्घ समास पदों के द्वारा, महाप्राण अक्षरों के द्वारा सम्यक् रूप से होती है। जैसे-

**चंचद्भुजभ्रमितचण्डगदाभिघात-**
**संचूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य।**
**स्तयानावनद्धघनशोणितशोणपाणि-**
**रुत्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि भीमः॥**

यहाँ श्रुतिकटु वर्णो के ञ्च इत्यादि के सम्मिलित होने से बड़े सामासिक पद और सत्व से ओज गुण की सम्यक् अभिव्यक्ति होती है।

**ग. प्रसाद**- प्रसाद का लक्षण दर्पण में कहा है-

**'चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः।**
**स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च॥'** इति।

अग्नि जैसे शुष्क ईंधन को शीघ्र व्याप्त कर लेती है वैसे ही जो गुण चित्त को शीघ्र व्याप्त करता है वह प्रसाद कहलाता है। यह प्रसाद सभी रसों और रचनाओं में है। श्रुति मात्र से अर्थ के बोधक शब्द प्रसाद गुण की अभिव्यक्ति का कारण है। जैसे उदाहरण-

ध्यान दें:

**सूचीमुखेन सकृदेव कृतव्रणस्त्वं**
**मुक्ताकलाप! लुठसि स्तनयोः प्रियायाः।**
**बाणैः स्मरस्य शतशो विनिकृत्तमर्मा**
**स्वप्नेऽपि तां कथमहं न विलोकयामि॥**

इस प्रकार गुण वर्णित किए गए हैं।

## पाठगत प्रश्न-1

1. काव्य के उत्कर्ष के हेतु कौन होते हैं?
2. गुणादि कैसे काव्य के उपकारक है?
3. गुण का स्वरूप क्या है?
4. गुण के कितने भेद है, और वे कौन-से हैं?
5. माधुर्य का लक्षण क्या है?
6. माधुर्य की अभिव्यक्ति का क्या निमित्त है?
7. माधुर्य गुण किन रसों में होता है?
8. माधुर्य का एक उदाहरण दो?
9. ओज का लक्षण क्या है?
10. ओज की अभिव्यक्ति का क्या निमित्त है?
11. ओज गुण का किस में आधिक्य होता है?
12. ओज गुण का एक उदाहरण दो?
13. प्रसाद का लक्षण क्या है?
14. प्रसाद की अभिव्यक्ति का क्या निमित्त है?
15. प्रसाद का एक उदाहरण दो?

## 10.2 ) रीति का स्वरूप

रीति अवयव संस्थान के समान है पहले ही प्रतिपादित किया गया है। अब रीति किसे कहते हैं यह साहित्य दर्पण में कहा गया है-

**''पदसंघटना रीतिरंगसंस्थाविशेषवत्। उपकर्त्री रसादीनाम्।''**

शरीर में यथास्थान अवयवों का संगठन के समान शब्द अर्थ से युक्त काव्य रूपी शरीर में माधुर्यादि गुण व्यंजन वर्णों के सन्निवेश से रीति होती है, वह परम्परा के द्वारा रसादि की पोषिका होती है। एवं वह रीति साहित्य दर्पण के अनुसार चार प्रकार वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली और लाटी है। ध्वनिकारादि के अभिप्राय से ती नहीं रीति है, लाटी का प्रयोजन नहीं है। फिर भी यहाँ तो साहित्य दर्पणकार ने चारों का सामान्य परिचय दिया है।

ध्यान दें:



**क. वैदर्भी**- माधुर्य गुण के अभिव्यंजक वर्णों के द्वारा सुकुमार बन्ध से युक्त, समास रहित, छोटे समास सहित जो रचना है वह वैदर्भी रीति है। वैसा ही दर्पण में है-

**''माधुर्यव्यंजकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका।**
**अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते॥''** इति।

अर्थात् बहुलता से कोमल वर्ण होने चाहिए। यह माधुर्य गुण से अभिव्यंजित शृंगार, करुण आदि रसों में प्रयोग योग्य है। जैसे उदाहरण-

**लताकुंजं गुंजन् मदवदलिपुंज चपलयन्**
**समालिंगन्नंगं द्रुततरमनंगं प्रबलयन्।**
**मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्**
**रजोवृन्दं विन्दन् किरति मकरन्दं दिशि दिशि।** इति।

**ख. गौडी**- ओज प्रकाशक वर्णों के द्वारा समास बहुल उद्धट पदयोजना गौडी होती है। दर्पण में कहा है-

**''ओजःप्रकाशकैर्वर्णैर्बन्ध आडम्बरः पुनः। समासबहुला गौडी''॥** इति।

क्रोधादि प्रधान में रौद्रादि रसों में यह प्रयुक्त करते है। जैसे-

**विकचकमलगन्धैरन्धयन् भृंगमालाः**
**सुरभितमकरन्दं मन्दमावाति वातः।**
**प्रमदमदनमाद्यद्यौवनोद्दामरामा-**
**रमणरभसखेदस्वेदविच्छेददक्षः॥** इति।

**ग- पांचाली**- गौडी वैदर्भी के व्यंजक के अतिरिक्त वर्णों के द्वारा, पाँच अथवा छः समस्त पदों का वह बन्ध पांचाली होता है। वैसा ही साहित्य दर्पण में है-

**''वर्णैः शेषैः पुनर्द्वयोः। समस्तपंचषपदो बन्धः पांचालिका मता।''** इति।

यहाँ उदाहरण है-

**मधुरया मधुबोधितमाधवीमधुसमृद्धिसमेधितमेधया।**
**मधुकरांगनया मुहुरुन्मदध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे॥** इति।

**घ. लाटिका**- लाटिका रीति तो साहित्य दर्पणकार को अभिमत है। वैसा ही साहित्य दर्पण में उसका लक्षण है-

**''लाटी तु रीतिर्वैदर्भीपांचाल्योरन्तरे स्थिता।''** इति।

यहाँ उदाहरण है-

**अयमुदयति मुद्राभञ्जनः पद्मिनीनाम्**
**उदयगिरवनालीबालमन्दारपुष्पम्।**
**विरहविधुरकोकद्वन्द्वबन्धुर्विभिन्दन्**
**कुपितकपिकपोलक्रोडताम्रस्तमांसि॥** इति।

इस प्रकार सामान्य रीति कही गई है।

## पाठगत प्रश्न-2

16. रीति का स्वरूप क्या है?
17. रीति के कितने भेद है और वे कौन-से हैं?
18. वैदर्भी रीति का लक्षण क्या है?
19. वैदर्भी रीति का एक उदाहरण दो?
20. गौडी रीति का लक्षण क्या है?
21. गौडी रीति का एक उदाहरण दो?
22. पांचाली रीति का लक्षण क्या है?
23. पांचाली रीति का एक उदाहरण दो?
24. लाटी रीति का लक्षण क्या है?
25. लाटी रीति का एक उदाहरण दो?
26. लाटी रीति किसके मत में नहीं है?

## 10.3 ) अलंकार का स्वरूप

काव्य के उपकर्षक में अलंकार भी उनमें से एक होता है। वह ही कटक कुण्डलादि के समान होता है। जैसे केवल कटककुण्डलादि शरीर की शोभा के अतिशय से शरीर के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं वैसे ही शब्द अर्थ से युक्त काव्य की शोभा को बढ़ाने वाले अलंकार काव्य की आत्मा रस के उत्कर्षक होते हैं। अलंकार का लक्षण साहित्य दर्पण में है-

**''शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः।**
**रसादीनुपकुर्वन्तेऽलंकारास्तेऽंगदादिवत्॥''** इति।

जो किसी को सुशोभित करने का साधन हो वह अलंकार है, बहुत से वामानादि अलंकारिक चिन्तन करते हैं। वह अलंकार ही काव्य शरीरभूत शब्द अर्थ का लोकोत्तर रमणीयता का सम्पादक है।

शब्द अर्थ की विचित्रता से अलंकार दो प्रकार के है- शब्दालंकार और अर्थालंकार। कुछ अलंकारिक शब्दार्थालंकार इस तृतीय पक्ष को भी कहते हैं। अनुप्रासादि शब्दालंकार और उपमा रूपकादि अर्थालंकार होते हैं। उनमें कुछ अलंकारों को नीचे प्रस्तुत किया गया हैं-

**क. शब्दालंकार**- जिस अलंकार में शब्द की प्रधानता होती है वह अलंकार शब्दालंकार कहलाता है। शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक, और वक्रोक्ति को वर्णित किया गया है-

1. **अनुप्रासः** - स्वर की विषमता रहने पर भी शब्द के साम्य को अनुप्रास अलंकार कहते है। उसका लक्षण दर्पण में है-

**''अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।''** इति।

स्वर वर्ण विचित्रता को उत्पन्न नहीं करते। इसलिए लक्षण में स्वर सादृश्य को स्वीकार नहीं किया गया है। जैसे यहाँ उदाहरण है-

ध्यान दें:

ध्यान दें:



**आदाय वकुलगन्धानन्धीकुर्वन् पदे पदे भ्रमरान्।**
**अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः॥** इति।

पदे-पदे में, मन्द-मन्दं, पावनः पवनः इत्यादि व्यंजनवर्णो की समानता अनुप्रास अलंकार है। वह अनुप्रास पांच प्रकार का है- **छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास, श्रुत्युनप्रास, अन्त्यानुप्रास और लाटानुप्रास।** उनके विशेष अध्ययन के लिए साहित्यदर्पण देखें।

2. **यमकम्**- अर्थयुक्त होकर भिन्न अर्थ वाले स्वर व्यंजन के समूह की उसी क्रम में आवृत्ति को यमक कहते हैं। वैसा ही लक्षण विश्वनाथ ने कहा है-

**''सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः।**
**क्रमेण तेनैवावृत्तिःर्यमकं विनिगद्यते॥''** इति।

स्वरव्यंजन का समूह कहीं अर्थवान कहीं निरर्थक होता है। उसे ही प्रतिपादित करने के लिए लक्षण में सत्यर्थे इस पद को प्रयुक्त किया। यहाँ उदाहरण है-

**''नवपलाश-पलाश-वनं पुरः स्फुटपराग-परागत-पंकजम्।**
**मृदुल-तान्त-लतान्तमलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोहरैः॥** इति

इस श्लोक में पलाश-पलाश, सुरभिं सुरभिम् दोनों ही स्वर व्यंजन के समूह की आवृत्ति सार्थक है। लतान्त-लतान्त यहाँ प्रथम निरर्थक है। परागपराग यहाँ द्वितीय की निरर्थकता है। इस प्रकार यहाँ स्वरव्यंजन के समूह की उसी क्रम में आवृत्ति होने से यमक अलंकार है-

3. **वक्रोक्ति**- वक्रोक्ति अलंकार का लक्षण विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में कहा है-

**''अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यमन्यथा योजयेद्याद यदि।**
**अन्यः श्लेषेण काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततो द्विधा॥''** इति।

जहाँ किसी अन्य के कहे अन्यार्थक वाक्य को कोई दूसरा श्रोता यदि सुनकर श्लेष अथवा काकु से अन्य अर्थ को वर्णित करता है तब वह वक्रोक्ति नामक अलंकार है। भिन्न कण्ठ ध्वनि काकु कहलाती है। वह वक्रोक्ति सामान्यतः श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति के भेद से दो प्रकार की होती है। उसका उदाहरण है जैसे-

**''के यूयं, स्थल एव सम्प्रति वयम्, प्रश्नो विशेषाश्रयः,**
**किं ब्रुते विहगः, स वा फणिपतिर्यत्रास्ति सुप्तो हरिः।**
**वामा यूयमहो विडम्बरसिकः कीदृक् स्मरो वर्तते।**
**येनास्मासु विवेकशून्यमनसः पुंस्वेव योषिद्भ्रमः॥''** इति।

यहाँ वक्ता ने के यूयम् पूछा। तब श्रोता ने 'के' इसकी जल अर्थ में श्लेष से कल्पना की। फिर कहता है- हम तो अभी स्थल में ही हैं। प्रथम वक्ता फिर कहता है- प्रश्न विशेषपरक है। अर्थात् व्यक्ति विशेष आश्रित प्रश्न है। श्रोता श्लेष से विः का विहग परक और शेष का नागराज परक अर्थ ग्रहण करके कहता है- कि बताइए तो सही वह पक्षी है अथवा फणिपति जिनके ऊपर विष्णु सोते हैं। इस प्रकार से श्लेष से वक्ता के अन्य तात्पर्य वाक्य का अन्य अर्थ से श्रोता ने यहाँ कल्पना की इसलिए वक्रोक्ति अलंकार है। सामान्यतः तीन शब्दालंकार प्रस्तुत किए हैं।

**ख. अर्थालंकार**- अर्थ वैचित्र्य से जो अलंकार होता है वह अर्थालंकार है। अर्थालंकारों में प्रवेश के लिए उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, समासोक्ति अर्थालंकार यहाँ प्रस्तुत हैं।

1. **उपमा**- अर्थालंकारों में सादृश्यमूलक अलंकारों की जननी उपमा होती है। उसका लक्षण साहित्य दर्पण में प्रस्तुत किया गया है।

ध्यान दें:

**''साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैवउपमा द्वयोः।''** इति।

एक वाक्य में दो पदार्थों के, वैधर्म्य रहित, वाक्य सादृश्य को उपमा कहते है। जिसके द्वारा सादृश्य को ग्रहण करते है वहाँ जिसका सादृश्य है वह उपमान है। मुख में सादृश्य है इसलिए मुख उपमेय होता है।

यहाँ लक्षण में वाच्यम् पद के उपादान से रूपक अलंकार का निषेध होता है। क्योंकि रूपक में साम्य व्यंग्य होता है। इसी प्रकार अवैधर्म्य पद से व्यतिरेक का निराकरण होता है। कारण है केवल व्यतिरेक में साधर्म्य के साथ वैधर्म्य भी कहा जाता है। वाक्यैक्य पद के उपादान से उपमेयोपमाया का निषेध होता है। क्योंकि उपमेयोपमाया में दो वाक्य होते है। द्वयोः पद के उपादान से अनन्वय का निषेध होता है, वहाँ एक ही साम्यकथन से।

इस अलंकार के पूर्णोपमा और लुप्तोपमा दो भेद है। जिस उपमा में उपमेय, उपमान, साधारणधर्म, और सादृश्यवाचक होते हैं वह पूर्णोपमा होती है। एवम् अंश चतुष्टय से सम्पन्न पूर्णोपमा है। पूर्णोपमा का उदाहरण है-

**वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।**
**जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥** इति।

यहाँ वागर्थौ उपमान, पार्वतीपरमेश्वरौ उपमेय, इव सादृश्यवाचक शब्द है, सम्पृक्तत्वरूप साधारण धर्म है अतः पूर्णोपमा है।

जिस उपमा में उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और सादृश्य वाचक चारों में से एक का, दो अथवा तीन का ग्रहण नहीं होता वह लुप्तोपमा है। यहाँ उदाहरण है जैसे-

**मुखमिन्दुर्यथा पाणिः पल्लवेन समः प्रिये।**
**वाचः सुधा इवोष्ठस्ते बिम्बतुल्यो मनोऽश्मवत्॥** इति।

यहाँ यथाक्रम आनन्द, कोमल, मधुर, कठिन साधारण धर्म वाचक शब्दों के अनुपादान से लुप्तोपमा है। और वह श्रौती आर्थी के भेद से बहुत प्रकार की है। वह सब दर्पणादि में देखा जाना चाहिए।

1. **रूपक**- रूपक अलंकार अभेद प्रधान होता है, उसका लक्षण साहित्य दर्पण में है-

**''रूपकं रूपितारोपाद्विषये निरपह्नवे।'' इति।**

प्रकृत गोपन को रूपक कहते हैं। निषेध रहित विषय उपमेय में रूपित उपमान के आरोप से सादृश्यता अतिश्य महिमा के अभेद वर्णन से रूपक अलंकार है। अर्थात् रूपक अलंकार में उपमान उपमेय का अभेद प्रतिपादित है। मुख चन्द्रमा के समान उपमा है, मुख चन्द्रमा ही है रूपक है। यहाँ उदाहरण है जैसे-

**पान्तु वो जलदश्यामाः शांङ्गर्ज्याघतकर्कशाः।**
**त्रैलोक्यमण्डपस्तम्भाश्चत्वारो हरिबाहवः॥** इति।

यहाँ त्रैलोक्यम् हरिबाहवः ये दो उपमेय है। मण्डप स्तम्भ ये दो उपमान है। यहाँ त्रैलोक्य ही मण्डप, हरिबाहवः ही स्तम्भ है अभेद वर्णन से रूपक अलंकार है। और वह रूपक परम्परित, निरंग और सांग के भेद से तीन प्रकार का है। विशेष भेद ज्ञान के लिए साहित्य दर्पणादि ग्रन्थों को देखना चाहिए।

2. **उत्प्रेक्षा**- उत्प्रेक्षा अलंकार सम्भावनात्मक है। उसका लक्षण साहित्य दर्पण में है-

**''भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।''** इति।

ध्यान दें:



प्रकृत प्रस्तुत की अप्रस्तुत के रूप में सम्भावना करने को उत्प्रेक्षा कहते है। मन्ये, शंके, ध्रुवं, प्रायः, इव इत्यादि उत्प्रेक्षा वाचक होते हैं। उसका उदाहरण है जैसे-

**ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।**
**गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव॥** इति।

यहाँ प्रस्तुत गुणों में सप्रसवत्व की सम्भावना से उत्प्रेक्षा अलंकार है। इस अलंकार के वाच्य प्रतीयमान इत्यादि भेद है। उनके ज्ञान के लिए साहित्य दर्पणादि ग्रन्थों को देखना चाहिए।

3. **दृष्टान्त**- दृष्टान्त अलंकार तो समर्थ्यसमर्थक भाव मूलक अलंकार है। साहित्यदर्पण में दृष्टान्त अलंकार का लक्षण कहा है-

**''दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्॥''** इति।

जहाँ दो वाक्यों के मध्य में धर्म सहित समान धर्म विशिष्ट वस्तु के सामान्य धर्म के प्रतिबिम्बन को प्रतिबिम्ब भाव से वर्णन होता है वह दृष्टान्त अलंकार है। सादृश्य के अवधानगम्य होने को प्रतिबिम्बन कहते हैं।

**''अविदितगुणापि सत्कविभणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम्।**
**अनधिगतपरिमलापि हि हरति दृशं मालतीमाला॥''** इति।

अच्छे कवि की उक्ति के गुण न जानने पर भी कानों में मधुरस बरसाती है इस वाक्य का समर्थन, प्रतीत न होते हुए भी मालती माला की गन्ध दृष्टि को हर लेती है वाक्य की समर्थक होती है। दोनों वाक्य में वमन और हरण दो साधारण धर्म है। यहाँ समानता से ही सामान्य धर्म में बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव होता है यह दृष्टान्त अलंकार का लक्षण है।

4. **समासोक्ति**- कविराज विश्वनाथ ने साहित्यदर्पणनामक ग्रन्थ में समासोक्ति अलंकार के लक्षण को कहा है-

**''समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिंगविशेषणैः।**
**व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः॥''** इति।

समान कार्य लिंग अथवा विशेषण से प्रस्तुत विषय में अन्य अप्रस्तुत का वस्तु विषय का जहाँ व्यवहार का आरोप हो वह समासोक्ति है। यहाँ उदाहरण है जैसे-

**''असमाप्तजिगीषस्य स्त्रीचिन्ता का मनस्विनः।**
**अनाक्रम्य जगत् कृत्स्नं नो सन्ध्यां भजते रविः॥''** इति।

जिसकी जीतने की इच्छा न पूर्ण हुई हो, उस जैसे नीतिज्ञ पुरुष की सम्भोग की इच्छा कैसे सम्भव है यह प्रथम वाक्यार्थ है। यहाँ नायक और नायिका प्रस्तुत है। और द्वितीय वाक्य का अर्थ होता है सूर्य सम्पूर्ण जगत को आक्रान्त न करके सन्धया से नहीं मिलता है। इस श्लोक में नायक में सूर्य का और नायिका में सन्ध्या के व्यवहार के आरोप से समासोक्ति अलंकार है। यहाँ आरोप में लिंग साम्य कारण होता है। सूर्य में नायक का और पुल्लिङ्ग होने से नायक में सूर्य का व्यवहार, सन्ध्या नायिका में स्त्रीलिंग होने से नायिका में सन्ध्या के व्यवहार का आरोप होता है। इस प्रकार सामान्य रूप से पांच अर्थालंकार वर्णित है।

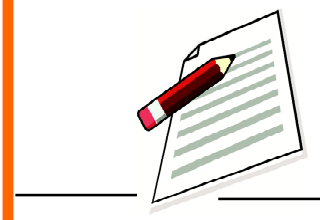

ध्यान दें:

## पाठगत प्रश्न-3

27. अलंकार का लक्षण क्या है?
28. अलंकार कितने प्रकार के और कौन-से हैं?
29. अनुप्रास का लक्षण क्या है?
30. अनुप्रास के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?
31. यमक का लक्षण क्या है?
32. यमक का उदाहरण क्या है?
33. सत्यर्थे यह पद यमक के लक्षण में किसलिए है?
34. वक्रोक्ति का क्या लक्षण है?
35. वक्रोक्ति के कितने भेद हैं?
36. सादृश्यमूलक अलंकार की जननी क्या है?
37. उपमा का लक्षण क्या है?
38. उपमा कितने प्रकार की और कौन-सी है?
39. पूर्णोपमा में अंशचतुष्टय क्या-क्या है?
40. रूपक का लक्षण क्या है?
41. रूपक के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?
42. उत्प्रेक्षा अलंकार का लक्षण क्या है?
43. दृष्टान्त का लक्षण क्या है?
44. दृष्टान्त का उदाहरण क्या है?
45. प्रतिबिम्बन क्या है?
46. समासोक्ति का लक्षण क्या है?

## 10.4 ) छन्द का स्वरूप

काव्य के अनुशीलन के लिए छन्दों का ज्ञान अनिवार्य है। और उसके छन्द का विकास सर्वप्रथम वेदों में परिलक्षित है। छन्द ज्ञान के बिना वेदमन्त्रों को अच्छी तरह से उच्चारित नहीं कर सकते हैं। इसलिए वेदों के उपकार के लिए यह वेदांग पादस्थानीय होता है। छन्द का क्या नाम है ऐतरेय आरण्यक में - 'मानवान् पापकर्मभ्य: छादयति छन्दांसि इति छन्द:।'' व्याकरणाचार्य महर्षि पाणिनी के मत में छन्द धातु से छन्द शब्द की व्युत्पत्ति है। जो छन्दों में निबद्ध है वह छन्दशास्त्र होता है। इस शास्त्र का प्रथम ग्रन्थ पिंगल महर्षि द्वारा रचित पिंगल छन्द सूत्र है।

**क. पद्यविभाग**- छन्दोबद्ध पद्य ही चार चरण वाला होता है। और वह वृत्त पद्य और जाति पद्य के भेद से दो प्रकार का है। वैसा ही छन्दोमंजरी में कहा है-

ध्यान दें:



**''पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा।**
**वृत्तमक्षरसंख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत्॥'' इति।**

वृत्त पद्य में अक्षरों की गणना और जाति छन्द में मात्रा की गणना होती है। मात्रा तीन प्रकार की होती है। और वे एकमात्रा, द्विमात्रा और त्रिमात्रा है। वहाँ ह्रस्व की एक मात्रा, दीर्घ की द्विमात्रा और प्लुत की तीन मात्रा है।

वृत्त समवृत्त, अर्धसमवृत्त और विषमवृत्त के भेद से तीन प्रकार का है। जिस वृत्त के चारों चरण में गुरुलघु क्रम से समान संख्या के अक्षर हो वह समवृत्त है। इन्द्रवज्रा, मालिनी वसन्ततिलका इत्यादि उदाहरण है। जिस वृत्त का प्रथम चरण तृतीय चरण के समान चतुर्थ चरण द्वितीय चरण के समान हो वह अर्धसमवृत्त है। पुष्पिताग्रा, सुन्दरी, माल भारिणी इत्यादि इसके उदाहरण हैं। जिस वृत्त के चारों चरण भिन्नाक्षर विशिष्ट होते हैं वह विषम वृत्त है। उद्गाता, सौरभक इत्यादि यहाँ उदाहरण है। वैसा ही छन्दोमंजरी में कहा है-

**''समं समचतुष्पादं भवत्यर्धसमं पुनः॥**
**आदिस्तृतीयवद् यस्य पादस्तुर्यो द्वितीयवत्।**
**भिन्नचिह्नचतुष्पादं विषमं परिकीर्तितम्॥''** इति।

**ख. पद्योपकारकाः गणाः**- समवृत्त छन्द में जो गण व्याप्त हैं वे अक्षर गण होते हैं। वे हि मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, जगण, भगण, नगण, गगण, लगण ये दश गण है। ये समवृत्त के उपकारक गण होते हैं। इनमें मगण से आरम्भ होकर नगण पर्यनत जो गण है वे तीन अक्षर से निर्मित होते हैं। गगण और लगण एक अक्षर विशिष्ट हैं। यहाँ अक्षर शब्द स्वर वर्ण का ही बोध करते हैं। छन्दोमंजरी में गणों का लक्षण कहा गया है-

**''मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।**
**जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥**
**गुरुरेको गकारस्तु लकारो लघुरेककः।''** इति।

मगण त्रिगुरु है। जिस गण में तीन स्वरवर्ण गुरु होते हैं वह मगण है। संयोग से पूर्व स्वरवर्ण गुरुसंज्ञक होता है। नकार त्रिलघु है। जिस गण में तीन स्वर लघु होते हैं वह नगण है। आदिगुरु अर्थात् जिस गण में आदि स्वर वर्ण गुरु और अन्य लघु होते हैं वह भगण है। आदिलघु अर्थात् जिस गण में केवल प्रथम वर्ण लघुसंज्ञक होता है वह यगण है। गुरुमध्यगत अर्थात् जगण में मध्यम वर्ण गुरु संज्ञक और अन्य लघु है। रगण में मध्यम वर्ण लघुसंज्ञक होता है। सगण में अन्तिम वर्ण गुरु होता है और अन्य लघु। तगण में अन्तिम वर्ण लघुसंज्ञक है आदि गुरु है। गुरु में एक गकार है अर्थात् गगण में एक गुरुवर्ण होता है। लकार में लघु एक अर्थात् लगण में एक लघुवर्ण होता है। दस गणों के चिह्न नीचे दिए गए हैं-

| गण के नाम | लक्षण | चिह्न |
|---|---|---|
| मगण | त्रिगुरु | ऽऽऽ |
| नगण | त्रिलघु | ।।। |
| भगण | आदिगुरु | ऽ।। |
| यगण | आदिलघु | ।ऽऽ |
| जगण | गुरुमध्यगत | ।ऽ। |

ध्यान दें:

| | | |
|---|---|---|
| रगण | लमध्य | ऽ।ऽ |
| सगण | अन्तगुरु | ।।ऽ |
| तगण | अन्तलघु | ऽऽ। |
| गगण | गुरुरेक | ऽ |
| लगण | लघुरेक | । |

मात्रा वृत्त के उपयोगी गण पांच होते हैं- सर्वगुरु, अन्तगुरु, मध्यगुरु, आदिगुरु और सर्वलघु है। वैसा ही छन्दोमंजरी में कहा है-

**''ज्ञेयाः सर्वान्तमध्यादिगुरवोऽत्र चतुष्कलाः।**
**गणाश्चतुर्लघूपेताः पंचार्यादिषु संस्थिताः॥''** इति।

| गण | चिह्न | मात्रा |
|---|---|---|
| सर्वगुरु | ऽऽ | चतस्रः |
| अन्तगुरु | ।।ऽ | चतस्रः |
| मध्यगुरु | ।ऽ। | चतस्रः |
| आदिगुरु | ऽ।। | चतस्रः |
| सर्वलघु | ।। ।। | चतस्रः |

ये गण चतुश्कला होते हैं। चतुश्कला चार मात्रिक है। चार मात्रा जहाँ हो वह गण चतुर्मात्रक है। जिस गण में सभी वर्ण गुरु हो वह सर्वगुरु है। जिस गण में अन्तिम वर्ण गुरु होता है वह अन्तगुरु है, और अन्य दो वर्ण एकमात्रिक होते हैं। जिस गण में मध्य वर्ण गुरु होता है वह मध्यगुरु है। और अन्य दो लघु वर्ण होते हैं। जिस गण में आदि वर्ण गुरु है वह आदि गुरु है, और अन्य दो वर्ण लघु होते हैं। जिस गण में सभी वर्ण लघु होते हैं वह सर्व लघु है। यहाँ यह ध्यान योग्य है कि मात्रा वृत्त में चतुर्मात्रिक गण होते हैं। इसलिए प्रत्येक गण में चार मात्रा अनिवार्य है। यहाँ सुविधा के लिए तालिका दी गई है-

मात्रा तीन प्रकार की होती है- एकमात्रा, द्विमात्रा, त्रिमात्रा। वहाँ एकमात्रिक ह्रस्ववर्ण, द्विमात्रिक दीर्घ और त्रिमात्रिक प्लुत है। वैसे ही कहा है-

**''एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।**
**त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यंजनं चार्धमात्रकम्॥'' इति।**

ग. **लघुगुरुव्यवस्था**- गुरुवर्ण कौन-से है, लघुवर्ण कौन-से हैं यह शंका सबके मन में उठती है। छन्दोमंजरी में इसके समाधान के लिए कारिका है-

**''सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।**
**वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥''** इति।

अनुस्वार से युक्त सअनुस्वार स्वर गुरुसंज्ञक है। जैसे- ग्राम को जाता है यहाँ मकार के उत्तरवर्ती अकार से परम अनुस्वार है। इसलिए अनुस्वार युक्त वह अकार गुरु है। वहाँ अनुस्वार अवसान का भी उपलक्षण है। उस अवसान से व्यंजन भी लघु गुरु होता है। इसी प्रकार विसर्ग संयुक्त स्वर गुरु है। जैसे राम यहाँ विसर्ग से पूर्व मकारोत्तर अकार गुरु है। इसी प्रकार संयुक्तवर्ण से पूर्व वर्ण गुरु है। जैसे रक्त यहाँ क्तेति संयुक्त वर्ण से पूर्व वर्ण रकारोत्तर अकार गुरु है। पद के अन्त में स्थित लघु वर्ण विकल्प से गुरु

ध्यान दें:



और गुरु वर्ण प्रयोजन के अनुसार लघु वर्ण होता है।

घ. **यति**- छन्दों में यति का महत्व है। जिह्वा का इष्ट विश्राम स्थान यति है। वह विच्छेद अथवा विराम कह सकते हैं। गंगादास कविराज के द्वारा वह कहा है-

**''यतिर्जिह्वेष्टविश्रामस्थानं कविभिरुच्यते।**
**सा विच्छेदविरामाद्यैः पदैर्वाच्या निजेच्छया॥''** इति।

यति छन्द में सब जगह नहीं होती है। पद के अन्त में यति चमत्कार कारिका होती है। पद के मध्य में चमत्कार का नाश करती है। वह यति पादान्त और पादमध्या है। वहाँ जैसे वंशस्थविल छन्द में पादान्त यति है।

**न तज्जलं यन्न सुचारुपंकजं/**
**न पंकजं तद् यदलीनषट्पदम्॥ इति।**
**पादमध्या यतिः यथा मालिनीच्छन्दसि-**
**सरसिजमनुविद्धं/शैवलेनापि रम्यं/**
**मलिनमपि हिमांशोः/लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति॥** इति।

यहाँ 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः' छन्द के लक्षण से पादान्त में जैसे यति वैसे ही पाद के मध्य में आठवें अक्षर से परं होता है।

ङ. **छन्द**- वृत्त सम, अर्धसम, विषम के भेद से तीन प्रकार का है। वहाँ समवृत्तों के पुनः 26 भेद हैं। समवृत्त छन्दों में कुछ छन्दों का परिचय नीचे प्रस्तुत है।

1. **इन्द्रवज्रा** - त्रिष्टुप छन्द में 11 अक्षर हैं। इसका एक भेद इन्द्रवज्रा होता है। इसका लक्षण है- **''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः''** इति। जिस छन्द के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और दो गुरु क्रम से होते हैं वह छन्द इन्द्रवज्रा है। यहाँ पादान्त में यति है। उसका उदाहरण है जैसे-

   ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ। ऽ ऽ

   गोष्ठे गि-रिं-सव्य-करेण धृत्वा/

   रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ।/

   यो गोकुलं गोपकुलंच सुस्थं/

   चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः।।/इति

   इस श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः दो तगण, एक जगण और दो गुरु वर्ण है। इन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण होता है। यहाँ सब चरण के अन्त में यति है। इसलिए छन्द के लक्षण में उसका उल्लेख नहीं है।

2. **उपेन्द्रवज्रा**- यह त्रिष्टुप छन्द का एक प्रकार है। उपेन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण छन्दोमंजरी में है- **''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततोगौ''** इति। इन्द्रवज्रा छन्द का प्रथम अक्षर लघु होकर उपेन्द्रवज्रा छन्द होता है। इस प्रकार इन्द्रवज्रा का प्रथम गण तगण है। उसके प्रथम अक्षर का लघु होकर मध्य में गुरु जगण होता है। एवं जिस छन्द के प्रत्येक चरण मे क्रम से जगण,तगण, जगण और दो गुरु वर्ण है वह उपेन्द्रवज्रा छन्द है। यहाँ भी पादान्त में यति है। उसका उदाहरण है जैसे-

ध्यान दें:

। ऽ। ऽ ऽ। । ऽ । ऽ ऽ

उपेन्द्र-वज्रादि-मणिच्छ-टाभिः/

विभूषणानां छुरितं वपुस्ते।/

स्मरामि गोपीभिरुपास्यमानं/

सुरद्रुमूले मणिमण्डपस्थम्।। इति।

यहाँ प्रस्तुत श्लोक में प्रत्येक चरण क्रमशः जगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्ण है। एवं उपेन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण यहाँ संगत होता है।

3. **रथोद्धता**- त्रिष्टुप् छन्द का कोई भेद रथोद्धता है। उसका लक्षण छन्दोमंजरी में है- **''रान्नराविह रथोद्धता लगौ।''** इति। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण, रगण, लघु और गुरु होते है। यहाँ पाद के अन्त में यति है। रथोद्धता छन्द का उदाहरण है-

ऽ। ऽ। ।। ऽ। ऽ । ऽ/

एवमाश्रमविरुद्धवृत्तिना/

संयमः किमति जन्मतस्त्वया।/

सत्वसंश्रयसुखो हि दुष्यते/

कृष्णसर्पशिशुनेव चन्दनः।। इति।

प्रकृत श्लोक के प्रत्येक चरणों मे क्रम से रगण, नगण, रगण, लघुवर्ण और गुरुवर्ण है। इस प्रकार रथोद्धता का लक्षण सिद्ध होता है।

4. **वंशस्थविलम्**- बारह अक्षर वाले जगती छन्द का एक प्रकार वंशस्थविलम् है। उसका लक्षण छन्दोमंजरी में है- **''वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ''** इति। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से जगण, तगण, जगण और रगण होते है वह वंशस्थविलम् है। यहाँ भी पादान्त में यति है। इस छन्द का उदाहरण है-

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ। ऽ । ऽ/

अयं स ते तिष्ठति संगमोत्सुको/

विशंकसे भीरु यतोऽवधीरणाम्।/

लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं/

श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्।।/इति।

श्लोक के प्रत्येक चरण में क्रम से जगण, तगण, जगण और रगण है वहाँ वंशस्थविलम् का लक्षण सिद्ध है।

5. **वसन्ततिलका**- चौदह अक्षर वाले शर्कया का एक प्रकार वसन्ततिलकम् है। वसन्ततिलका इसका नामान्तर है। उसका लक्षण छन्दोमंजरी में है- **''ज्ञेयं वसन्ततिलकं तभजा जगौ गः''**। तभजा तगण, भगण, जगण, जगौ- जगण, गुरुवर्ण गः गुरुवर्ण। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में तगण, भगण, दो जगण और दो गुरुवर्ण क्रम से होते है वह वसन्ततिलका है। उसकी यति पाद के अन्त में होती है। उसका उदाहरण है-

ध्यान दें:



ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ/

फुल्लं व-सन्तति-लकं ति-लकं व-नाल्या:/

लीलापरं पिककुलं कलमत्र रौति।/

वात्येष पुष्पसुरभिर्मलयाद्रिवातो/

यातो हरि: स मधुरां विधिना हता: स्म:।।/इति।

इसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु वर्ण है। अत: वसन्ततिलका छन्द है।

6. **मालिनी** - पन्द्रह अक्षर वाले अतिशर्करी छन्द मालिनी छन्द का एक प्रकार है। मालिनी छन्द का लक्षण है- **''ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकै:''** इति। यह मालिनी ननमयययुता है। अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, मगण और दो यगण होते है वह मालिनी छन्द है। भोगि संख्या आठ एवं लोक संख्या सात का बोधक है। इस प्रकार प्रत्येक चरण के पहले आठवें वर्ण पर यति फिर सातवें अक्षर पर चरण के अन्त में एक यति। यहाँ चरण के मध्य में यति होती है। इसका उदाहरण है-

।। । ।।। ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ। ऽ ऽ

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं

मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।। इति।

इसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण, दो मगण और दो यगण है। और आठवें वर्ण पर फिर सातवें वर्ण पर यति है। इस प्रकार मालिनी छन्द का लक्षण सिद्ध होता है। इस प्रकार कुछ समवृत्त छन्दों को यहाँ प्रस्तुत किया है।

## पाठगत प्रश्न-4

47. छन्दशास्त्र के प्रणेता कौन है?
48. छन्दशास्त्र किस प्रकार का वेदांग है?
49. पद्य का क्या स्वरूप है?
50. पद्य के कौन-से विभाग होते हैं?
51. वृत्त का लक्षण क्या है?
52. वृत्त के कितने विभाग हैं?
53. समवृत्त का स्वरूप क्या है?
54. अर्धसमवृत्त का स्वरूप क्या है?
55. विषमवृत्त का स्वरूप क्या है?

ध्यान दें:

56. पद्य के उपकारक गण कौन-से है?
57. मात्रा छन्द के उपकारक गणों के नाम कौन-से हैं?
58. गणों की स्वरूपबोधिका कारिका को लिखिए।
59. लघु गुरु के व्यवस्था परक श्लोक को लिखिए।
60. यति का लक्षण क्या है?
61. यति कितने प्रकार की है और वे कौन-सी है?
62. यति कहाँ चमत्कार के लिए प्रयोग होती है?
63. यति कहाँ चमत्कार का नाश करती है?
64. इन्द्रवज्रा छन्द का क्या लक्षण है?
65. उपेन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण क्या है?
66. रथोद्धता छन्द का लक्षण क्या है?
67. वंशस्थ छन्द का लक्षण क्या है?
68. वसन्ततिलका छन्द का लक्षण क्या है?
69. मालिनी छन्द का लक्षण क्या है?
70. मालिनी छन्द में कहाँ-कहाँ यति है?

## पाठ सार

काव्य की आत्मा रस के उपकारत्व से काव्य के उपकारक जो गुण, अलंकार, रीति है उनके स्वरूप को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। वहाँ आदि में गुण वर्णित है। जैसे शौर्यादि शरीर के उपकारक है उसी प्रकार माधुर्यादि शब्द अर्थरूपी काव्य की आत्मा रस के उपकारक हैं। गुण तीन प्रकार के है- माधुर्य, ओज और प्रसाद है। वहाँ माधुर्य चित्त की द्रुति का कारण होता है। समास रहित अथवा अल्प समासों से युक्त कटु शब्दों से रहित रचना उसकी अभिव्यक्ति का कारण है। सम्भोग में, करुण में, विप्रलम्भ में और शान्त में माधुर्य गुण क्रम से अधिकतम होता है। इस प्रकार चित्त का विस्तार रूप ओज गुण है। वह ही वीर, बीभत्स, रौद्र रसों में क्रमशः अधिक होता है। दीर्घ समास बहुल रचना इसकी अभिव्यक्ति का कारण है। शुष्क ईंधन के समान जो गुण चित्त को शीघ्र ही व्याप्त कर लेता है वह प्रसाद है। श्रुति मात्र से अर्थबोधक शब्द प्रसाद की अभिव्यक्ति का कारण है।

फिर अवयव के सन्निवेश के समान रीति है। दर्पणकार के मत में रीति तीन प्रकार की है- वैदर्भी, गौडी, पांचाली और लाटी। परन्तु ध्वनिकार के मत में लाटी रीति की अपेक्षा नहीं है। माधुर्य व्यंजक वर्णों से युक्त अल्पसमास अथवा समास रहित जो मधुर रचना है वह वैदर्भी है। ओज का प्रकाशन करने वाले वर्णों से उद्धृत रचना गौड़ी है। यहाँ पांच अथवा छः समस्त पदों को, पूर्व में कही गई दो रीति के अभिव्यञ्जकों को छोड़कर वर्णों से जो रचना है वह पांचाली है। लाटी रीति तो वैदर्भी पांचाली के बाद स्थित है। इस प्रकार रीति का परिचय दिया गया।

फिर कटक कुण्डल के समान अलंकार वर्णित है। अलंकार दो प्रकार के हैं- शब्दालंकार और

ध्यान दें:



अर्थालंकार। वहाँ शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक और वक्रोक्ति और अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, समासोक्ति ये अलंकार यहाँ वर्णित है।

वैयाकरण पाणिनी के मत में अभिप्राय अर्थ के बोधक से अथवा आनन्द पर्याय से छन्द् धातु से छन्द शब्द की उत्पत्ति हुई। पद्य छन्दोबद्ध चार चरण वाला होता है। वहाँ अक्षरगणना वाला पद्य वृत्त और मात्रा गणना वाला पद्य जाति कहलाता है। वसन्त तिलकादि वृत्त पद्य के उदाहरण होते हैं। आर्यादि जाति छन्द के उदाहरण है। वृत्त तीन प्रकार के है- समवृत्त, अर्धसमवृत्त और विषमवृत्त। उनके लक्षणों को कहकर के फिर वृत्त के उपकारक दस गण जाति में और उपकारक पांच गण यहाँ वर्णित है। फिर यति के स्वरूप को वर्णित किया है। यति जिह्वा का विराम स्थल होता है। फिर सानुस्वार और विसर्ग इत्यादि कारिका में छन्दों में लघु गुरु व्यवस्था वर्णित है। फिर समवृत्तों में इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, रथोद्धता, वंशस्थवि, वसन्ततिलका, मालिनी इन छन्दों के स्वरूप को सोदाहरण प्रस्तुत किया। यही पाठ का सार है।

## आपने क्या सीखा

- गुण स्वरूप और गुण भेद,
- रीति का स्वरूप और भेद,
- अलंकार स्वरूप और अलंकार भेद,
- कुछ प्रसिद्ध अलंकारों के लक्षण,
- पद्य का स्वरूप और पद्य भेद,
- कुछ छन्दों के लक्षण,

## पाठान्त प्रश्न

1. गुण के स्वरूप और गुण के भेदों को वर्णित कीजिए?
2. माधुर्य को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
3. ओजगुण को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
4. प्रसाद को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
5. रीति के स्वरूप और रीति के भेदों को वर्णित कीजिए?
6. वैदर्भी को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
7. गौडी को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
8. पांचाली को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
9. लाटी को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
10. अलंकार के स्वरूप को वर्णित कीजिए?
11. शब्दालंकारों में एक अलंकार के लक्षण को कीजिए?

ध्यान दें:

12. अर्थालंकारों में एक अलंकार के लक्षण को कीजिए?
13. अनुप्रास अलंकार को वर्णित कीजिए?
14. वक्रोक्ति को वर्णित कीजिए?
15. यमक को वर्णित कीजिए?
16. उपमा को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
17. रूपक को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
18. उत्प्रेक्षा को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
19. समासोक्ति को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
20. दृष्टान्त को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
21. पद्य के स्वरूप और पद्य के भेदों को वर्णित कीजिए?
22. वृत्त के स्वरूप और वृत्त के भेदों को वर्णित कीजिए?
23. यति के स्वरूप को वर्णित कीजिए?
24. श्लोक में लघु गुरु व्यवस्था को वर्णित कीजिए?
25. वृत्त के और जाति के गणों को वर्णित कीजिए?
26. इन्द्रवज्रा को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
27. उपेन्द्रवज्रा को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
28. रथोद्धता को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
29. वसन्ततिलका को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
30. मालिनी को सोदाहरण वर्णित कीजिए?
31. गुण किस प्रकार के होते है?

    क. शौर्यादि के समान  ख. अवयवसंस्थानविशेष के जैसे  ग. कटककुण्डल के समान।
32. सबसे अधिक माधुर्य कहाँ होता है-

    क. सम्भोग में  ख. करुण में  ग. वीर में।
33. ओज गुण का सभी की अपेक्षा आधिक्य कहाँ है-

    क. वीर में  ख. बीभत्स में  ग. रौद्र में  घ. शृंगार में।
34. ध्वनिकार के मत में कौन-सी रीति नहीं है?

    क. गौडी  ख. पांचाली  ग. लाटिका  घ. वैदर्भी।
35. रूपक कितने प्रकार के है?

    क. एक प्रकार के  ख. दो प्रकार के  ग. तीन प्रकार के  घ. चार प्रकार के।

ध्यान दें:



36. वृत्त किस प्रकार का है?

क. अक्षरसंख्यातम्  ख. वाक्यसंख्यातम्  ग. पदसंख्यातम्।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### उत्तर-1

1. काव्य के उत्कर्ष के हेतु गुण, अलंकार, रीति होते हैं।
2. गुणादि काव्य की आत्मा रस के उपकारक हैं।
3. गुण का स्वरूप दर्पण में है-'रसस्यांगित्वमाप्तस्य धर्माः शौर्यादयो यथा। गुणाः' इति।
4. तीन गुणों के भेद माधुर्य, ओज, प्रसाद है।
5. माधुर्य का लक्षण है- **''चित्तद्रवीभावमयो ह्लादो माधुर्यमुच्यते।''** इति।
6. रेफ डकारादिश्रुति कटुवर्णो से रहित, वर्ग के अन्तिम वर्ण सहित, समास रहित और अल्प समास वाली मधुर रचना माधुर्य की अभिव्यक्ति का कारण है।
7. सम्भोग में करुण में विप्रलम्भ में और शान्त में माधुर्य गुण क्रमशः अधिकता से होता है।
8. माधुर्य का एक उदाहरण है-

   **अनंगमंगलभुवस्तदपांगस्य भंङ्गयः।**
   **जनयन्ति मुहूर्यूनामन्तः सन्तापसन्ततिम्॥** इति।
9. ओज का लक्षण है- **''ओजश्चित्तस्य विस्ताररूपं दीप्तत्वमुच्यते।''** इति।
10. ओज की अभिव्यक्ति श्रुतिकटुवर्ण सहित, बड़े समास से युक्त महाप्राण वर्णों से युक्त रचना कारण है।
11. वीर बीभत्स रौद्र रसों में क्रमशः ओज गुण की अधिकता होती है।
12. ओज का एक उदाहरण है-

    **चंचद्भजभ्रमितचण्डगदाभिघात-**
    **संचूर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य।**
    **स्तयानावनद्धघनशोणितशोणपाणि-**
    **रुत्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि भीमः॥**
13. प्रसाद का लक्षण है-

    **'चित्तं व्यापनोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः।**
    **स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च॥'**
14. श्रुतिमात्र से अर्थबोधक शब्द प्रसाद की अभिव्यक्ति का कारण है।
15. प्रसाद का एक उदाहरण है-

    **सूचीमुखेन सकृदेव कृतव्रणस्त्वं**
    **मुक्ताकलाप लुठसि स्तनयोः प्रियायाः।**
    **बाणैः स्मरस्य शतशो विनिकृत्तमर्मा**

ध्यान दें:

**स्वप्नेऽपि तां कथमहं न विलोकयामि॥** इति।

**उत्तर-2**

16. शरीर में यथास्थान अवयवों का संगठन के समान शब्द अर्थ से युक्त काव्य रूपी शरीर में माधुर्यादि गुण व्यंजन वर्णों के सन्निवेश से रीति होती है, वह परम्परा के द्वारा रसादि की पोषिका होती है।

17. दर्पणकार के अनुसार रीति के चार भेद है- वैदर्भी, गौडी, पांचाली और लाटी।

18. वैदर्भी रीति का लक्षण है-

**''माधुर्यव्यंजकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका।**
**अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते॥''** इति।

19. वैदर्भी रीति का उदाहरण है-

**लताकुंजं गुंजन् मदवदलिपुंज चपलयन्**
**समालिंगन्नंगं द्रुततरमनंगं प्रबलयन्।**
**मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्**
**रजोवृन्दं विन्दन् किरति मकरन्दं दिशि दिशि।** इति।

20. गौडी रीति का लक्षण है-

**''ओजःप्रकाशकैर्वर्णैर्बन्ध आडम्बरः पुनः। समासबहुला गौडी''** इति।

21. गौडी रीति का एक उदाहरण है-

**विकचकमलगन्धैरन्धयन् भृंगमालाः**
**सुरभितमकरन्दं मन्दमावाति वातः।**
**प्रमदमदनमाद्यद्यौवनोद्दामरामा-**
**रमणरभसखेदस्वेदविच्छेददक्षः॥** इति।

22. पांचाली रीति का लक्षण है-

**''वर्णैः शेषैः पुनर्द्वयोः। समस्तपंचषपदो बन्धः पांचालिका मता।''** इति।

23. पांचाली रीति का उदाहरण है-

**मधुरया मधुबोधितमाधवींसमृद्धिसमेधितमेधया।**
**मधुकरांगनया मुहुरुन्मदध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे॥** इति।

24. लाटिका रीति का लक्षण है-

**''लाटी तु रीतिर्वैदर्भीपांचाल्योरन्तरे स्थिता।''** इति।

25. लाटिका रीति का उदाहरण है-

**अयमुदयति मुद्राभंजनः पद्मिनीनाम्**
**उदयगिरवनालीबालमन्दारपुष्पम्।**
**विरहविधुरकोकद्वन्द्वबन्धुर्विभिन्दन्**
**कुपितकपिकपोलक्रोडताम्रस्तमांसि॥** इति।

26. लाटी रीति ध्वन्यालोककारादि आनन्दवर्धनादि के मत में नहीं है।

ध्यान दें:



## उत्तर-3

27. अलंकार का लक्षण है-

**''शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः।**
**रसादीनुपकुर्वन्तोऽलंकारास्तेऽंगदादिवत्॥'' इति।**

28. अलंकार दो प्रकार के हैं- शब्दालंकार और अर्थालंकार।

29. अनुप्रास का लक्षण है-

**''अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।''** इति।

30. अनुप्रास के पांच भेद है। छेकानुप्रास, वृत्त्यनुप्रास, श्रुत्युनप्रास, अन्त्यानुप्रास और लाटानुप्रास।

31. यमक का लक्षण है-

**''सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः।**
**क्रमेण तेनैवावृत्तिःर्यमकं विनिगद्यते॥''** इति।

32. यमक का उदाहरण है-

**''नवपलाश-पलाश-वनं पुरः स्फुटपराग-परागत-पंकजम्।**
**मृदुल-तान्त-लतान्तमलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः॥** इति।

33. स्वर व्यंजन का समूह कहीं अर्थवान कहीं निरर्थक होता है। उसे ही प्रतिपादित करने के लिए लक्षण में सत्यर्थे इस पद को प्रयुक्त किया।

34. वक्रोक्ति का लक्षण है-

**''अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यमन्यथा योजयेद्याद यदि।**
**अन्यः श्लेषेण काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततो द्विधा॥''** इति।

35. वक्रोक्ति के दो भेद है- श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति।

36. सादृश्यमूलक अलंकार की जननी उपमा है।

37. उपमा का लक्षण है-

**''साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्यम् उपमा द्वयोः।''** इति

38. उपमा प्रधान रूप से दो प्रकार की है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा।

39. पूर्णोपमा के अंशचतुष्टय है- उपमान, उपमेय, सादृश्यवाचक और साधारणधर्म।

40. रूपक का लक्षण है-

**''रूपकं रूपितारोपाद्विषये निरपह्नवे।''** इति।

41. रूपक के तीन भेद है- परम्परित, निरंग और सांग।

42. उत्प्रेक्षा अलंकार का लक्षण है-

**''भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।''** इति।

43. दृष्टान्त का लक्षण है-

**''दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्॥''** इति।

ध्यान दें:

44. दृष्टान्त का उदाहरण है-

**''अविदितगुणापि सत्कविभणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम्।**
**अनधिगतपरिमलापि हि हरति दृशं मालतीमाला॥''** इति।

45. प्रणिधानगम्यम् का नाम प्रतिबिम्बन है।

46. समासोक्ति का लक्षण है-

**''अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।''** इति।

## उत्तर-4

47. छन्द शास्त्र के प्रणेता पिंगलाचार्य है।

48. छन्द पादरूप वेदांग है।

49. पद्य चतुष्पादात्मक होते हैं।

50. पद्य के दो विभाग है वृत्त और जाति।

51. वृत्त का लक्षण है-''वृत्तमक्षरसंख्यातम्।

52. वृत्त के तीन विभाग है- समवृत्त, अर्धसमवृत्त और विषमवृत्त।

53. समवृत्त का स्वरूप है- **''समं समचतुष्पादम्''** इति।

54. जिस वृत्त का प्रथम पाद तृतीयपाद के तुल्य, चतुर्थपाद द्वितीय पाद के तुल्य हो वह अर्धसमवृत्त है।

55. जिस वृत्त के चारों पाद भिन्नाक्षर विशिष्ट होते हैं वह विषम वृत्त है।

56. पद्य उपकारक है- मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, जगण, भगण, नगण, गगण, लगण ये दश गण है।

57. मात्रा छन्द के उपकारक गण है- सर्वगुरु, अन्तगुरु, मध्यगुरु, आदिगुरु और सर्वलघु।

58. गणों की स्वरूपबोधिका कारिका है-

**''मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।**
**जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥**
**गुरुरेको गकारस्तु लकारो लघुरेककः।''** इति।

59. लघुगुरु का व्यवस्थापरक श्लोक है-

**''सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।**
**वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥'' इति**

60. यति का लक्षण है- **'यतिर्जिह्वेष्टविरामस्थानम्'।**

61. यति दो प्रकार की है- पाद के मध्य में यति और पाद के अन्त में यति।

62. पदान्त में यति चमत्कार के लिए होती है

63. पद के मध्य में यति चमत्कार का नाश करती है।

64. इन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण है-**'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।'**

ध्यान दें:



65. उपेन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण है- **'उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा।' / जतजास्ततोगौ**

66. रथोद्धता छन्द का लक्षण है- **'रात्पैर्नरलगै रथोद्धता।'**

67. वंशस्थ छन्द का लक्षण है- **'वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ।'**

68. वसन्ततिलका छन्द का लक्षण है- **'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।'**

69. मालिनी छन्द का लक्षण है- **'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।'**

70. मालिनी छन्द में आठवें अक्षर फिर सातवें अक्षर पर चरण के अन्त पर यति है।